इडियोपैथिक पल्मोनरी फाइब्रोसिस (IPF)

संदर्भ: हाल ही में प्रसिद्ध तबला उस्ताद जाकिर हुसैन का इडियोपैथिक पल्मोनरी फाइब्रोसिस (IPF) के कारण निधन हो गया।

इडियोपैथिक पल्मोनरी फाइब्रोसिस (IPF) क्या है?

- इडियोपैथिक पल्मोनरी फाइब्रोसिस (IPF) एक ऐसी बीमारी है, जिसमें फेफड़ों के ऊतक में सूजन और निशान (फाइब्रोसिस) बन जाते हैं। इससे फेफड़ों की क्षमता कम हो जाती है, जिससे सांस लेने में परेशानी, थकान होने लगती है।
- यह बीमारी विशेष रूप से फेफड़ों के उन हिस्सों को प्रभावित करती है, जो हवा को कोशिकाओं तक पहुंचाते हैं। समय के साथ, यह फेफड़ों की कार्यप्रणाली को स्थायी रूप से नुकसान पहुंचाती है।

IPF कैसे होता है?

- IPF होने का ठीक कारण अभी तक नहीं पता चला है, इसलिए इसे 'इडियोपैथिक' कहा जाता है। लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि यह समस्याएँ इन कारणों से हो सकती हैं:
  - » पर्यावरणीय कारक जैसे धूल, धुआं और संक्रमण।
  - » स्वयं की प्रतिरक्षा प्रणाली का कमजोर होना
  - » शरीर का ज्यादा कोलेजन (एक तरह का प्रोटीन) बनाना।
- इसके अलावा, आनुवांशिक रूप स्थानांतरण भी इसका एक कारण माना जा सकता है।

IPF के लक्षण:

- सांस लेने में लगातार कठिनाई।
- सूखी और पुरानी खांसी।
- थकान और बिना कारण वजन कम होना।

जैसे-जैसे बीमारी बढ़ती है, यह गंभीर समस्याओं जैसे हृदय की कमजोरी और श्वसन विफलता का कारण बन सकती है।

IPF का इलाज और प्रबंधन:

- IPF का कोई सटीक इलाज या दवा नहीं है, लेकिन इलाज से बीमारी की प्रगति को धीमा किया जा सकता है:
  - » **दवाइयाँ:** कुछ दवाइयाँ जैसे पिरफेनीडोन और निंटेडनिब निशान बनने की गति को कम करती हैं।
  - » **ऑक्सीजन थेरेपी:** इससे शरीर में ऑक्सीजन का स्तर ठीक रहता है।
  - » **पल्मोनरी रिहैबिलिटेशन:** इसमें फेफड़ों के व्यायाम शामिल होते हैं।
- अगर बीमारी बहुत बढ़ जाए, तो फेफड़े का प्रत्यारोपण भी किया जा सकता है। जल्दी पहचान और बेहतर उपचार से मरीज का जीवन बेहतर हो सकता है।

खुली जेल

संदर्भ: पुणे की येरवाडा खुली जेल से एक हत्या के दोषी की आजीवन कारावास की सजा काटते हुए भागने की घटना सामने आई, जो इस साल की दूसरी ऐसी घटना है। इस घटना ने खुली जेलों की प्रकृति, चयन प्रक्रिया और प्रभावशीलता पर सवाल खड़े किए हैं।

खुली जेल का अवधारणा:

- खुली जेलें न्यूनतम सुरक्षा वाली सुविधाएं होती हैं, जिनका उद्देश्य सुधारात्मक प्रक्रिया को स्व-आवश्यकता, विश्वास और समुदाय से जुड़ाव के माध्यम से बढ़ावा देना है, न कि कड़ी निगरानी के माध्यम से। खुली जेलों का विचार 1950 के दशक में पहली बार गंभीरता से सामने आया था।
- महाराष्ट्र की पहली खुली जेल 1956 में येरवाडा केंद्रीय जेल में स्थापित की गई थी, इसके बाद 1968 में औरंगाबाद के पैठान में एक और खोली गई थी। आज महाराष्ट्र में 19 खुली जेलें हैं, जो राजस्थान के बाद दूसरे स्थान पर हैं, जहां 31 खुली जेलें हैं।
- मॉडल जेल मैनुअल के अनुसार खुली जेलों को तीन प्रकारों में बांटा गया है: सेमी-ओपन प्रशिक्षण संस्थान, ओपन प्रशिक्षण संस्थान/कार्य शिविर और ओपन कॉलोनियां।
- जो कैदी खुली जेल के लिए योग्य होते हैं, उनका आचरण अच्छा होना चाहिए और आम तौर पर उन्हें नियंत्रित जेल में कम से कम पांच साल बिताने होते हैं।
- खुली जेलों का संचालन राज्य-विशेष नियमों के तहत होता है, जो 1894 के कारागार अधिनियम और 1900 के कैदी अधिनियम के तहत आते हैं।

कैदियों का चयन कैसे होता है:

- कैदी जो लंबे समय तक केंद्रीय जेलों में सजा काट रहे होते हैं, उन्हें खुली जेलों के लिए सावधानीपूर्वक चयनित किया जाता है। एक समिति कैदियों के मामलों का अध्ययन करती है और योग्य उम्मीदवारों की एक सूची तैयार करती है।
- यह सूची चयन समिति को प्रस्तुत की जाती है, जिसमें जेलों के निरीक्षक जनरल और अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल होते हैं। खुली जेलों का उद्देश्य न्यूनतम सुरक्षा प्रदान करना है, जो विश्वास पर आधारित होती हैं, और कैदियों को उनके सजा के बाद जीवन के लिए विभिन्न सुधारात्मक गतिविधियों के जरिए तैयार किया जाता है।

खुली जेलों की भूमिका:

- खुली जेलों का मुख्य उद्देश्य सुधारात्मक प्रक्रिया है, जिसमें कैदियों को कृषि या व्यावासिक कार्यों में काम करने की उम्मीद होती है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

- इन सुविधाओं का उद्देश्य कैदियों को उनके कारावास के बाद के जीवन के लिए तैयार करना है, ताकि उन्हें काम करने के कौशल, जिम्मेदारी और सामाजिक एकीकरण प्राप्त हो सके।
- खुली जेलें कैदियों को उनके विश्वासयोग्यता को साबित करने का एक अवसर देती हैं, जो आदर्श रूप से पुनः अपराध करने की संभावना को घटित करती हैं।
- हालांकि, खुली जेलों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि भागने की घटनाएं, जो कम निगरानी के कारण उत्पन्न होती हैं। आलोचकों का कहना है कि स्व-आवश्यकता पर निर्भर होना समस्या उत्पन्न कर सकता है, खासकर यदि निगरानी अपर्याप्त हो या नियमों का कमजोर तरीके से पालन हो रहा हो।

जलवाहक योजना

संदर्भ: केंद्रीय सरकार ने हाल ही में 'जलवाहक' योजना शुरू की है, जिसका उद्देश्य मालवाहन के लिए आंतरिक जलमार्गों का उपयोग बढ़ाना है। इस पहल का लक्ष्य लॉजिस्टिक्स लागत को कम करना, सड़क और रेल नेटवर्क को कम भीड़-भाड़ वाला बनाना और भारत के आंतरिक जलमार्ग प्रणाली की व्यापारिक क्षमता को खोलना है।

जलवाहक योजना के बारे में:

- 'जलवाहक' योजना को राष्ट्रीय जलमार्ग 1 (गंगा), 2 (ब्रह्मपुत्र) और 16 (बराक नदी) पर मालवाहन को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया है।
- इस योजना के तहत, 300 किमी से अधिक दूरी पर माल भेजने वाले माल मालिकों को ऑपरेटिंग लागत पर 35% तक की पुनर्भुगतान राशि मिलेगी। यह योजना तीन साल के लिए वैध है और इसका उद्देश्य प्रमुख शिपिंग कंपनियों, फ्रेट फॉरवर्डर्स और व्यापारिक संस्थाओं के लिए आपूर्ति श्रृंखलाओं को बेहतर बनाना है।
- योजना के तहत तीन मालवाहक जहाजों को हरी झंडी दिखाई गई, जो सीमेंट, जिप्सम और कोयला लेकर चलेंगे। ये जहाज निश्चित मार्गों पर यात्रा करेंगे, जैसे कोलकाता-पटना-वाराणसी और कोलकाता-पांडु (गुवाहाटी), जिससे यह दिखाया जा सकेगा कि आंतरिक जलमार्ग मालवाहन के लिए प्रभावी और पर्यावरण के अनुकूल हैं।
- **अनुमानित प्रभाव:** यह योजना 800 मिलियन टन-किलोमीटर की परिवहन क्षमता में बदलाव लाने का अनुमान है और 2027 तक 95.4 करोड़ का निवेश होने की संभावना है। यह पहल लंबी दूरी के माल परिवहन के लिए लागत-कुशल समाधान प्रदान करने के लिए बनाई गई है।

लाभ:

- **व्यापार दक्षता में सुधार:** यह सड़क और रेल परिवहन के मुकाबले एक सस्ता विकल्प प्रदान करती है, खासकर लंबी दूरी के माल परिवहन के लिए।
- **माल की मात्रा में वृद्धि:** राष्ट्रीय जलमार्गों पर माल की मात्रा में काफी वृद्धि हुई है, जो 2013-14 में 18.07 मिलियन टन से बढ़कर 2023-24 में 132.89 मिलियन टन हो गई है। सरकार का लक्ष्य 2030 तक इसे 200 मिलियन टन और 2047 तक 500 मिलियन टन तक पहुंचाना है।
- **पर्यावरणीय स्थिरता:** जलमार्ग अन्य परिवहन तरीकों की तुलना में अधिक पर्यावरण अनुकूल होते हैं, जिससे कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है।

चुनौतियाँ:

- हालाँकि भारत में 20,236 किमी लंबा जलमार्ग नेटवर्क है, लेकिन इसके माल परिवहन की क्षमता का अभी भी पर्याप्त उपयोग नहीं हो पा रहा है, खासकर अमेरिका और चीन जैसे देशों की तुलना में। मुख्य चुनौतियाँ हैं आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास और माल के सही समय पर आवागमन की सुनिश्चितता।

आंतरिक जलमार्ग प्राधिकरण भारत (IWAI):

आंतरिक जलमार्ग प्राधिकरण भारत (IWAI) की स्थापना साल 1986 में की गई थी और यह भारत में राष्ट्रीय जलमार्ग नेटवर्क के विकास और रख-रखाव के लिए जिम्मेदार है। यह मंत्रालय पोर्ट्स, शिपिंग और जलमार्ग के तहत कार्य करता है। इसके प्रमुख कार्यों में शामिल हैं:

- **आंतरिक जल परिवहन (IWT) को बढ़ावा देना:** IWAI जलमार्गों का उपयोग यात्रियों और माल के परिवहन के लिए एक स्थायी और लागत-कुशल समाधान के रूप में बढ़ावा देता है।
- **नियमन और सुरक्षा:** IWAI जलमार्गों पर चलने वाले जहाजों के लिए संचालन मानक सेट करता है और सुरक्षा उपायों को सुनिश्चित करता है।
- **हितधारकों के साथ सहयोग:** IWAI भारतीय शिपिंग कॉर्पोरेशन जैसे संस्थाओं के साथ मिलकर IWT के विकास को बढ़ावा देता है।

ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

17 December 2024

नया पूर्वी मार्ग

संदर्भ: चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री मार्ग, जिसे पूर्वी समुद्री गलियारा भी कहा जाता है, ने भारत-रूस व्यापार संबंधों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है, विशेष रूप से कच्चे तेल के व्यापार में। इस समुद्री गलियारे ने दोनों देशों के बीच की दूरी को संक्षिप्त करते हुए शिपिंग समय और लागत को काफी कम कर दिया है, जिससे भारत जुलाई 2024 में रूस के तेल का सबसे बड़ा खरीदार बन गया है।

चेन्नई–व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारा (VCMC) के बारे में:

- चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारा (VCMC) एक समुद्री मार्ग है जो चेन्नई (भारत) को व्लादिवोस्तोक (रूस) से जोड़ता है और यह पूर्वी समुद्री गलियारे का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य व्यापार और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ाना है।

मुख्य विवरण:

- **पृष्ठभूमि:** यह मार्ग भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 2019 में रूस यात्रा के दौरान औपचारिक रूप से शुरू किया गया था और जिसका उद्देश्य भारत और रूस के बीच व्यापार को बढ़ाना है, खासकर ऊर्जा, खनिजों और रक्षा क्षेत्रों में।
- **मार्ग:** यह मार्ग 5,600 समुद्री मील लंबा है और इसमें जापान सागर, दक्षिण चीन सागर, मलक्का जलडमरूमध्य, बंगाल की खाड़ी और अंडमान द्वीप समूह जैसी जगहों से गुजरता है।
- **बंदरगाह स्थान:** व्लादिवोस्तोक रूस का सबसे बड़ा प्रशांत बंदरगाह है, जो चीन-रूस सीमा के पास स्थित है। चेन्नई भारत के पूर्वी तट पर स्थित एक प्रमुख बंदरगाह है।

लाभ:

- **परिवहन समय में कमी:** शिपिंग का समय 40+ दिनों से घटकर सिर्फ 16 दिन हो गया है।
- **लागत-कुशलता:** परिवहन लागत में कमी होने से यह व्यापारियों के लिए आकर्षक विकल्प बन गया है।
- **रणनीतिक महत्व:** यह भारत और रूस के बीच आर्थिक संबंधों को मजबूत करता है, खासकर ऊर्जा क्षेत्र में।

भौगोलिक प्रभाव:

- यह मार्ग क्षेत्रीय गतिशीलता को बदल सकता है, जिससे भारत को प्रशांत क्षेत्र में ज्यादा प्रभाव मिलेगा, जबकि चीन की बढ़ती शक्ति को संतुलित किया जा सकता है। हालांकि, इसका मार्ग दक्षिण चीन सागर से होकर जाता है, जिससे सुरक्षा संबंधी चिंताएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

भारत के लिए रणनीतिक और आर्थिक लाभ:

- **ऊर्जा सुरक्षा:** भारत, जो दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा कच्चे तेल का उपभोक्ता है, अपनी ऊर्जा जरूरतों का 85% से ज्यादा आयात करता है। रूस से सस्ता तेल प्राप्त करना भारत की ऊर्जा रणनीति को सुदृढ़ करता है, खासकर वैश्विक तेल कीमतों में वृद्धि के बीच।
- **भौगोलिक लाभ:** भारत के बढ़ते संबंध रूस के साथ चीन के साथ रूस के बढ़ते संबंधों का संतुलन बनाने में मदद करते हैं। रूस भारत के रक्षा क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण साझेदार है, खासकर भारतीय सशस्त्र बलों और परमाणु क्षमताओं के लिए।
- **रणनीतिक प्रभाव:** यह साझेदारी भारत के भू-राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाती है, जिससे रक्षा प्रौद्योगिकी और ऊर्जा सुरक्षा में सहयोग बढ़ सकता है।

तेल के अलावा अन्य व्यापार पर प्रभाव:

- **व्यापार का विविधीकरण:** यह नया मार्ग सिर्फ कच्चे तेल के व्यापार को ही नहीं, बल्कि कोयला, उर्वरक, धातुएं और कंटेनरयुक्त माल के व्यापार को भी बढ़ावा देता है।
- **रूस को निर्यात में वृद्धि:** भारत से निर्यात होने वाले प्रसंस्कृत खनिज, लोहा और स्टील, चाय और समुद्री उत्पाद रूस को तेजी से और सस्ती शिपिंग के कारण बढ़ रहे हैं।
- **दीर्घकालिक व्यापार प्रतिबद्धताएँ:** नया समुद्री मार्ग भारत और रूस के बीच दीर्घकालिक व्यापार समझौतों को बढ़ावा देता है, जो दोनों देशों के लिए लाभकारी हैं।

सांता आना हवा

संदर्भ: हाल ही में 9 दिसंबर को कैलिफोर्निया के मालिबू जंगल में 'फ्रैंकलिन फायर' लगी, जो 4,000 एकड़ से अधिक क्षेत्र को जलाकर लगभग 22,000 लोगों को प्रभावित कर चुकी है। इस आग की कुछ दिनों में बुझने की संभावना है। विशेषज्ञ इस आग की तीव्रता को 'सांता आना' हवाओं और जलवायु परिवर्तन से जोड़ रहे हैं।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

'सांता आना' हवाएं क्या हैं?

- सांता आना हवाएं तेज, सूखी, ढलान से नीचे आने वाली हवाएं होती हैं, जो ग्रेट बेसिन में ठंडी, उच्च-दबाव वाली वायुद्रव्यमानों से उत्पन्न होती हैं और यह दक्षिणी कैलिफोर्निया और उत्तरी बाजा कैलिफोर्निया के तटीय इलाकों को प्रभावित करती हैं।
- जब ग्रेट बेसिन में उच्च दबाव बनता है, तो कैलिफोर्निया के तट से एक दबाव अंतर बनता है। इसके कारण रेगिस्तानी इलाकों से पेसिफिक महासागर की ओर मजबूत हवाएं बहने लगती हैं। जैसे ही हवाएं नीचे की ओर गिरती हैं, वे संकुचित होती हैं, गर्म होती हैं और आर्द्रता घट जाती है, जिससे वनस्पतियां अत्यधिक ज्वलनशील हो जाती हैं।
- ये हवाएं सामान्यत: अक्टूबर से जनवरी के बीच चलती हैं। यह उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में एक स्थानीय हवा है।

सांता आना हवाओं का जलवायु परिवर्तन में भूमिका:

- हालांकि सांता आना हवाओं से उत्पन्न जंगलों की आग स्वाभाविक होती है, विशेषज्ञों का कहना है कि हाल के वर्षों में कैलिफोर्निया का जंगलों की आग का मौसम लंबा हो गया है। एक अध्ययन में 2021 में यह पाया गया कि राज्य का जलाने का मौसम अगस्त से बढ़कर जुलाई में शिफ्ट हो गया है। इसके अलावा, आग की तीव्रता भी बढ़ी है।
- 2023 के एक अध्ययन के अनुसार, कैलिफोर्निया के इतिहास की 10 सबसे बड़ी आग में से 5 आग केवल 2020 में ही लगीं। जलवायु परिवर्तन के कारण वसंत और गर्मी का मौसम अधिक गर्म हो गया है, बर्फ जल्दी पिघलने लगी है, और सूखा मौसम लंबा हो गया है, जिससे वनस्पतियां आग के लिए और अधिक संवेदनशील हो गई हैं।
- अगर ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन जारी रहता है, तो स्थिति और खराब हो सकती है, जिससे जलवायु पर और अधिक गंभीर प्रभाव पड़ने की संभावना है।

दुनिया भर की प्रमुख स्थानीय हवाएं:

- **मिस्ट्रल:** मिस्ट्रल एक ठंडी, सूखी हवा होती है जो उत्तर या उत्तर-पश्चिम से भूमध्य सागर की ओर बहती है, खासकर सर्दियों में, जिससे तापमान में काफी गिरावट आती है। यह दक्षिणी फ्रांस की रोन घाटी में सामान्य रूप से पाई जाती है।
- **फोएन (Fohn):** फोएन एक गर्म, सूखी हवा होती है जो आल्प्स पर्वत से नीचे की ओर बहती है, खासकर स्विट्जरलैंड, जर्मनी, ऑस्ट्रिया और उत्तरी इटली में। यह अचानक तापमान में वृद्धि और सूखापन लाती है, अक्सर बर्फ को पिघलाती है।
- **सिरोक्को:** सिरोक्को एक गर्म, सूखी हवा है जो सहारा रेगिस्तान से उत्पन्न होती है और भूमध्य सागर के पार बहती है। यह रेत और धूल लेकर आती है, जिससे दृश्यता में कमी आती है और तापमान बढ़ जाता है।
- **बोरा:** बोरा एक ठंडी, सूखी हवा होती है जो उत्तर-पूर्व से बहती है, खासकर एड्रियाटिक सागर क्षेत्र में, जिसमें क्रोएशिया और इटली शामिल हैं। यह मजबूत और झंझावाती होती है, जो विशेष रूप से सर्दियों में तापमान में अचानक गिरावट का कारण बनती है।
- **हरमटन:** हरमटन एक सूखी, धूल से भरी व्यापारिक हवा होती है जो सहारा से पश्चिमी अफ्रीका में प्रभावित होती है, खासकर सहेल क्षेत्र और घाना, नाइजीरिया और सेनेगल के कुछ हिस्सों में। यह मुख्य रूप से सर्दियों में होती है और बारीक धूल कणों के कारण दृश्यता कम कर देती है।

पॉवर पैक्ड न्यूज

कॉम्प्रिहेन्सिव और प्रोग्रेसिव एग्रीमेंट फॉर ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप (CPTPP)

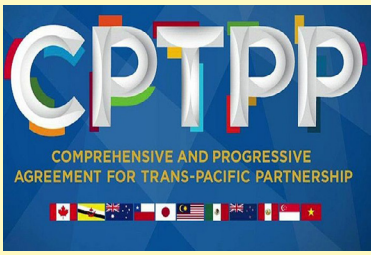

- हाल ही में यूनाइटेड किंगडम ने कॉम्प्रिहेन्सिव और प्रोग्रेसिव एग्रीमेंट फॉर ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप (CPTPP) में शामिल होने का ऐलान किया है। यह समझौता व्यापार में रुकावटों को कम करने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को मजबूत करने का उद्देश्य रखता है।
- CPTPP एक व्यापार समझौता है जो 8 मार्च 2018 को सैंटियागो, चिली में साइन हुआ था। यह 30 दिसंबर 2018 से प्रभावी हुआ था, जब इसे साइन करने वाले देशों में से 50% देशों ने इसे रैटिफाई किया था या छह देशों ने इसे स्वीकृति दी थी।
- दिसंबर 2024 तक, CPTPP में 12 सदस्य देश हैं: ऑस्ट्रेलिया, ब्रुनेई, कनाडा, चिली, जापान, मलेशिया, मेक्सिको, न्यूजीलैंड, पेरू, सिंगापुर, यूनाइटेड किंगडम और वियतनाम।

कॉलैटरल-फ्री एग्रीकल्चरल लोन

- कृषि क्षेत्र को समर्थन देने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने किसानों के लिए कॉलैटरल-फ्री लोन की सीमा रूपये 1.6 लाख से बढ़ाकर 2 लाख कर

दी है। यह बदलाव 1 जनवरी 2025 से लागू होगा और इसका उद्देश्य किसानों पर बढ़ती इनपुट लागत और महंगाई के असर को कम करना है। इस प्रकार के लोन में किसानों को कुछ भी गिरवी नहीं रखना पड़ता है।

मुख्य बातें:

- बैंक को 2 लाख तक के कृषि लोन के लिए कॉलैटरल और मार्जिन की आवश्यकता को माफ करने का निर्देश दिया गया है, इसमें सहायक गतिविधियों के लिए भी लोन शामिल हैं।
- नए दिशा-निर्देश छोटे और सीमांत किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो कृषि क्षेत्र के 86% से अधिक हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- इस कदम से किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) लोन की संख्या बढ़ने की उम्मीद है, जो उधारी लागत को घटाने और कृषि कार्यों में निवेश को बढ़ाने में मदद करेगा। इसके साथ ही संशोधित ब्याज सब्सिडी योजना के तहत 3 लाख तक के लोन पर 4% ब्याज दर मिलेगी, जिससे वित्तीय समावेशन और टिकाऊ कृषि विकास को बढ़ावा मिलेगा।

CHARAK

- नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (NCL) ने 'CHARAK' (कम्युनिटी हेल्थ: ए रेस्पॉन्सिव एक्शन फॉर कोयलांचल) नामक एक स्वास्थ्य केंद्रित सीएसआर पहल शुरू की है, जिसका उद्देश्य सिंगरौली और सोनभद्र जिलों में आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए मुफ्त इलाज प्रदान करना है। जो परिवार 8 लाख से कम वार्षिक आय वाले हैं, वे इस योजना के पात्र होंगे।
- यह पहल प्राण घातक बीमारियों जैसे कैंसर, तपेदिक, एचआईवी, हृदय रोग, अंग प्रत्यारोपण, जलने से विकलांगता, तंत्रिका संबंधी विकार, लीवर की बीमारियाँ, अचानक दृष्टि या श्रवण हानि और गंभीर शल्य आपातकालों का इलाज प्रदान करेगी। इलाज छब्स के अस्पताल या देशभर में सहायक अस्पतालों में किया जाएगा।
- यह योजना दूरदराज इलाकों में स्वास्थ्य सेवा की चुनौतियों को संबोधित करती है और प्रभावित परिवारों पर वित्तीय बोझ को कम करते हुए उन्हें गुणवत्ता वाली चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करती है। NCL के प्रयासों का उद्देश्य क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक हालात में सुधार करना है और पिछले दस वर्षों में कंपनी ने सीएसआर पहल के तहत 1,000 करोड़ से अधिक खर्च किए हैं। 'CHARAK' कोयलांचल क्षेत्र में सबसे कमजोर जनसंख्या के लिए स्वास्थ्य सेवा की पहुंच बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।